नजानू की कहानियां

3

निकोलाई नोसोव



नजानू चित्रकार कैसे बना



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

3

नजानू चित्रकार कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

6





ट्यूबेश बहुत अच्छा चित्रकार था। वह हमेशा एक लम्बा ब्लाऊज़ पहनता था जिसको वह "ओवर-ऑल" कहता था। ट्यूबेश जब अपना ओवर-ऑल पहनकर, लम्बे बालों को पीछे करके हाथों में रंगपट्टिका लेकर चित्रफलक के सामने खड़ा होता तो देखने में बहुत अच्छा लगता था। सब लोग एकदम समझ जाते थे कि उनके सामने एक सच्चा चित्रकार खड़ा है।

उस घटना के बाद, जब किसी को नजानू का संगीत सुनना पसंद नहीं आया, नजानू ने निश्चय किया कि वह चित्रकार बनेगा। वह ट्यूबेश के पास पहुंचा और बोला:

"सुनो ट्यूबेश, मैंने भी यह निश्चय किया है कि मैं चित्रकार बनूंगा। मुझे कुछ रंग और एक बुरुश दे दो।"

ट्यूबेश कंजूस नहीं था। उसने नजानू को अपने पुराने रंग और बुरुश भेंट कर दिये। उसी समय नजानू के पास उसका एक मित्र आया जिसका नाम था चिथड़िया। नजानू उससे बोला:

"बैठो चिथड़िया, मैं अभी तुम्हारा चित्र बनाता हूं।"

चिथड़िया बहुत प्रसन्न हुआ और जल्दी से एक कुरसी पर बैठ गया। नजानू ने उसका चित्र बनाना आरम्भ कर दिया। नजानू की इच्छा थी कि वह चिथड़िये का ऐसा



चित्र बनाये जिसमें उसका मित्र बहुत ही ख़ूबसूरत नज़र आये। इसलिए नजानू ने चिथड़िये के चित्र में नाक लाल रंग से बनाया है, कान हरे रंग से, होंट नीले और आंखें नारंगी रंग से। चिथड़िया अपना चित्र तुरन्त देखना चाहता था। उसमें ज़रा भी धैर्य नहीं था। वह कुरसी पर चैन से नहीं बैठ पा रहा था और सारे समय कभी इधर मुड़ता कभी उधर मुड़ता रहता।

"हिलो-डुलो नहीं," नजानू ने उससे कहा, "नहीं तो तुम्हारा चित्र तुम्हारी सूरत जैसा नहीं बन पायेगा।"

"अब क्या चित्र मेरी सूरत से मिलता-जुलता बन रहा है?" चिथड़िया ने पूछा।

"हू-ब-हू तुम्हारी सूरत जैसा," नजानू ने उत्तर दिया और चित्र में बैंगनी रंग की मूंछें बना डालीं।

"मुझे दिखाओ तो चित्र कैसा बना है।" जब नजानू ने चित्र बनाना समाप्त किया तो चिथड़िया ने आग्रह किया।

नजानू ने चिथड़िया को उसका चित्र दिखाया।

"क्या मैं ऐसा हूं?" चिथड़िया डरकर चिल्लाया।

"और क्या, ऐसे ही तो हो। और कैसे हो सकते हो?"





"तुमने चित्र में मूंछें क्यों बनायीं? मेरी तो मूंछें हैं ही नहीं!"

"अरे, कभी न कभी तो निकल आयेंगी।"

"और नाक लाल क्यों है?"

"नाक को लाल मैंने इसलिए बनाया कि वह और सुंदर नज़र आये।"

"और बाल आसमानी रंग के क्यों हैं? क्या मेरे बाल आसमानी रंग के हैं?"

"हां, आसमानी रंग के हैं," नजानू ने उत्तर दिया। "लेकिन अगर तुम्हें आसमानी रंग के बाल पसंद नहीं हैं तो मैं उनको हरा भी बना सकता हूं।"

"नहीं, यह तो बहुत ही ख़राब चित्र है," चिथड़िया बोला। "इसे मुझे दे दो। मैं इसको फाड़ देता हूं।"

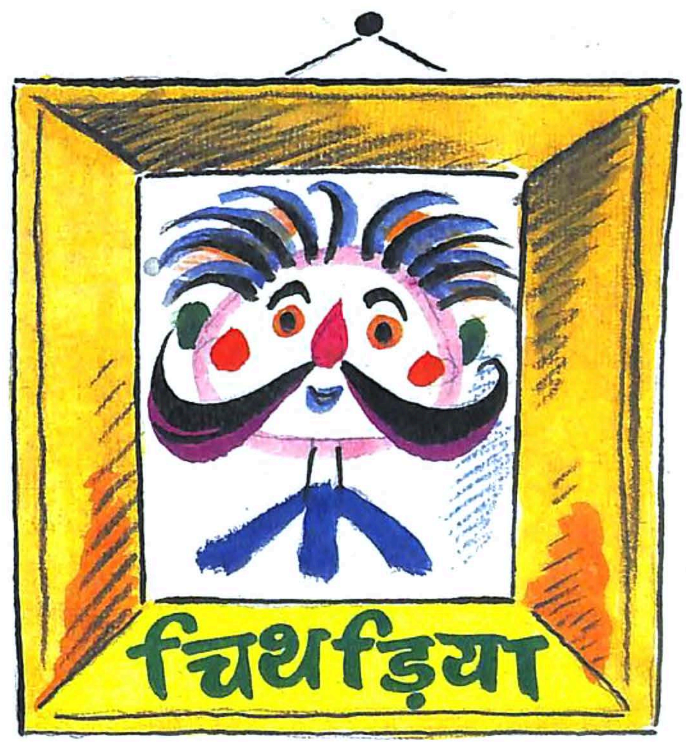
"इतनी कलात्मक रचना को नष्ट करने की क्या आवश्यकता है?" उत्तर में नजानू ने कहा।

चिथड़िया चित्र को झपट लेना चाहता था और इसपर उसमें और नजानू में झगड़ा होने लगा। शोर सुनकर जानू, डाक्टर टिकियावाला और बाक़ी छुटके दौड़कर वहां आये।

सब ने पूछा, "तुम दोनों लड़ क्यों रहे हो?"

"लीजिये," चिथड़िया चिल्लाया, "अब आप ही फ़ैसला कीजिये। आप बताइये यह चित्र किसका है? यह सही है न, कि यह मेरा चित्र नहीं है?"

"सही है, यह तुम्हारा चित्र नहीं है," छुटकों ने जवाब दिया। "इसमें तो कौओं को डराने के लिए बाग़ में लगाया जानेवाला पुतला बनाया गया है।"




गोलीबाज़
बड़बड़िया
गुलगुला
पेंचू

इस पर नजानू बोला :

"आप ठीक से नहीं बूझ पाये क्योंकि इस चित्र पर उसका नाम नहीं लिखा है। मैं अभी इस पर नाम लिख देता हूं तब आप सब लोग समझ जायेंगे कि यह किसका चित्र है।"

नंजानू ने पेंसिल उठायी और चित्र के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया : "चिथड़िया"। इसके बाद उसने चित्र को दीवार पर टांग दिया और बोला :

"चित्र दीवार पर टंगा रहे। सब इसको देख सकते हैं। किसी को मनाही नहीं है।"

"फिर भी," चिथड़िया बोला, "जब तुम सो जाओगे तो मैं आऊंगा और इस चित्र को फाड़कर फेंक दूंगा।"

"मैं रात भर सोऊंगा ही नहीं और पहरा दूंगा," नजानू ने उत्तर दिया।

चिथड़िया बहुत चिढ़ गया और घर लौट गया। नजानू सचमुच रात भर नहीं सोया।

जब सब की आंख लग गयी तब नजानू ने अपने रंग और बुरुश उठाये और सारे के सारे छुटकों के चित्र बनाने में जुट गया। गुलगुले को उसने ख़ूब मोटा बनाया, इतना मोटा कि चित्र में उसका शरीर बनाने के लिए जगह कम पड़ गयी। जल्दबाज़ के चित्र





में नजानू ने उसके पैर बहुत ही पतले-पतले बनाये और उसके शरीर के पिछले हिस्से पर पता नहीं क्यों कुत्ते जैसी दुम बना दी। शिकारी गोलीबाज़ को नजानू ने उसके कुत्ते गुर्रा पर सवारी करते हुए चित्रित किया। डाक्टर टिकियावाला की नाक के स्थान पर उसने थर्मामीटर बनाया। जानू के कान पता नहीं किस कारण गधे जैसे बना दिये। मतलब यह कि सबके चित्र उसने ऐसे बनाये कि उनको देखकर हंसी आती थी और सब ही चित्र बहुत बेतुके थे।

सुबह उसने ये सब चित्र दीवार पर टांग दिये और सब चित्रों के नीचे उसने सबों के नाम लिख दिये। इस प्रकार चित्रों की एक प्रदर्शनी लग गयी।

सवेरे सबसे पहले डाक्टर टिकियावाला जागे। उन्होंने दीवार पर टंगे चित्रों को देखा और ख़ूब हंसे। उनको सब चित्र इतने पसंद आये कि उन्होंने अपनी नाक पर बग़ैर कमानीवाली ऐनक चढ़ाकर उनको बहुत ध्यान से देखा। वह हर एक चित्र के पास गये और बड़ी देर तक हंसते रहे।

"शाबाश, नजानू!" डाक्टर टिकियावाला ने कहा। "मैं अपने जीवन में इतना कभी नहीं हंसा!"

अंत में वह अपने चित्र के पास जाकर खड़े हो गये और उन्होंने बड़ी सख़्त आवाज़ में पूछा:

"और यह कौन है? शायद यह मेरा चित्र है? नहीं, मैं ऐसा तो नहीं हूं। यह तो बहुत ख़राब चित्र है। अच्छा होगा अगर तुम इसको यहां से उतार लो।"

"क्यों उतार लूं? यह तो ऐसे ही टंगा रहे," नजानू ने जवाब दिया।

डाक्टर टिकियावाला बुरा मान गये और बोले:

"मैं देख रहा हूं, नजानू, कि तुम बीमार हो। शायद तुम्हारी आंखें कुछ ख़राब हो गयी हैं। तुमने यह कब देखा कि मेरी नाक की जगह पर थर्मामीटर है? तुम्हें रात को अंडी का तेल पीने की आवश्यकता है।"

नजानू को अंडी का तेल बिलकुल पसंद नहीं था। वह डर गया और बोला:

"नहीं, नहीं! अब मैं स्वयं देखता हूं कि यह चित्र बहुत ख़राब बना है।"

उसने डाक्टर टिकियावाला का चित्र उतार लिया और उसको फाड़ डाला।

डाक्टर टिकियावाला के बाद शिकारी गोलीबाज़ जागा। उसको भी चित्र बहुत पसंद आये। उनको देखकर हंसते-हंसते उसका दम फूल गया। मगर जब अंत में उसने




ट्यूबेश



अपना चित्र देखा तो उसका पारा फ़ौरन चढ़ गया।

"यह तो बहुत बुरा चित्र है," शिकारी ने कहा। "मेरी सूरत से तो यह बिलकुल नहीं मिलता। तुम इसको उतार लो, नहीं तो मैं तुम्हें अपने साथ शिकार पर कभी नहीं ले जाऊंगा।"

नजानू को दीवार पर से शिकारी गोलीबाज़ का चित्र भी उतारना पड़ा।

ऐसा ही सब चित्रों के साथ हुआ। सबको औरों के चित्र तो बहुत पसंद आते, पर अपने नहीं।

सबसे बाद में ट्यूबेश उठा। वह सबसे ज़्यादा देर तक सोता रहता था। जब





उसने अपना चित्र दीवार पर टंगा हुआ देखा तो वह बहुत नाराज़ हुआ और बोला कि वह चित्र नहीं है। वह तो किसी अनाड़ी की बनाई हुई तस्वीर है जो कला में कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकती। यह कहने के बाद ट्यूबेश ने चित्र दीवार से उतारकर फाड़ फेंका और नजानू से अपने रंग और बुरुश वापस ले लिये।

दीवार पर अब सिर्फ़ एक चित्र टंगा था – चिथड़िया का चित्र। नजानू ने उसे उतारा और अपने मित्र के पास गया।

"चिथड़िया, अगर तुम चाहो तो यह चित्र मैं तुम्हें भेंट कर सकता हूं। तुम इसको ले लो और मुझसे मेल कर लो," नजानू ने कहा।

चिथड़िया ने चित्र ले लिया और उसको फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर दिया और बोला:

"ठीक है, अब हममें सुलह हो गयी। लेकिन अगर तुम फिर कभी मेरा चित्र बनाओगे तो मैं किसी भी शर्त पर तुमसे मेल नहीं करूंगा।"

"अब मैं चित्रकारी कभी नहीं करूंगा," नजानू ने उत्तर दिया। "चित्र बनाते जाओ, बनाते जाओ, फिर भी कोई उसके लिए धन्यवाद नहीं देता, सब नाराज़ ही हो जाते हैं। मैं चित्रकार बनना नहीं चाहता।"

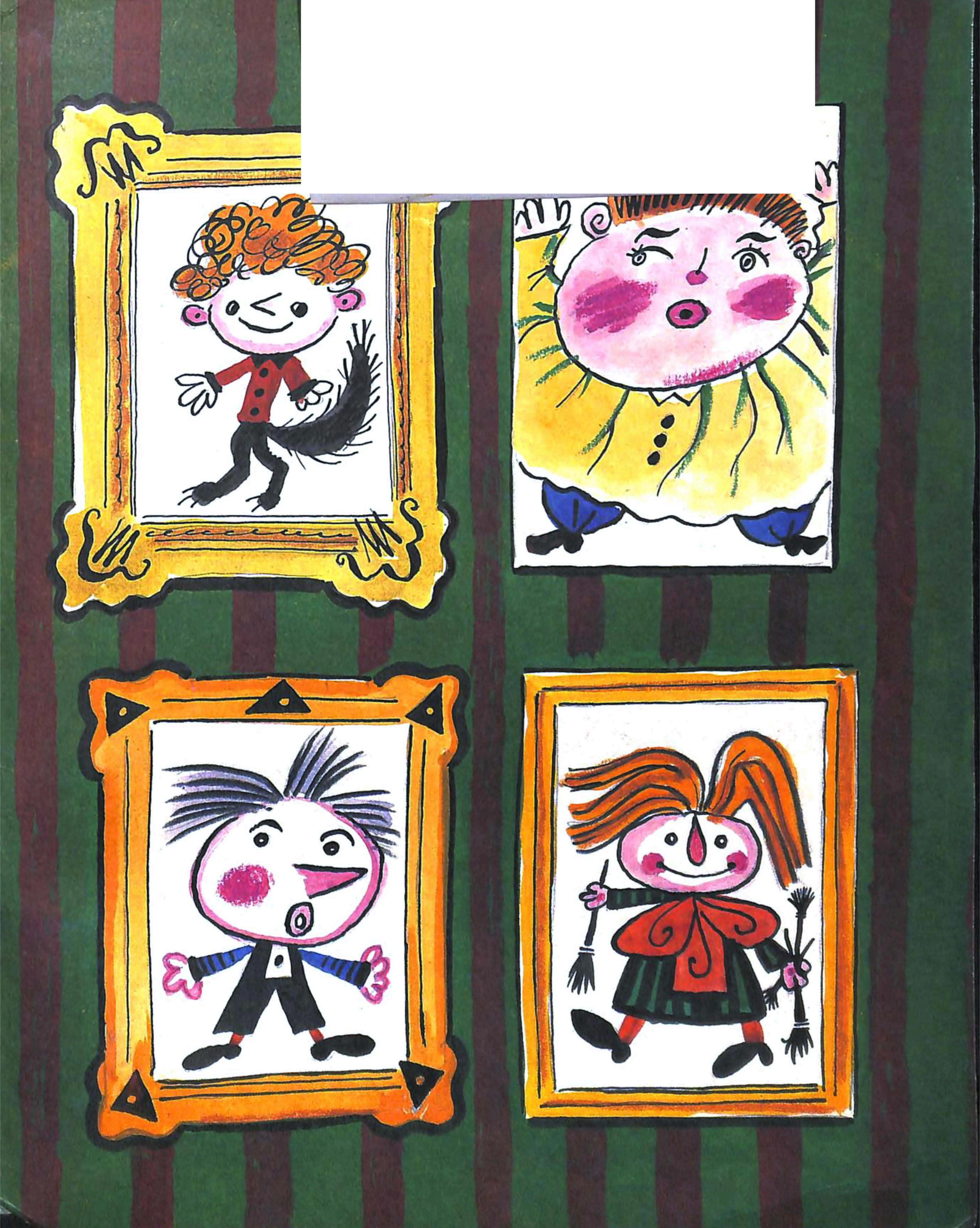


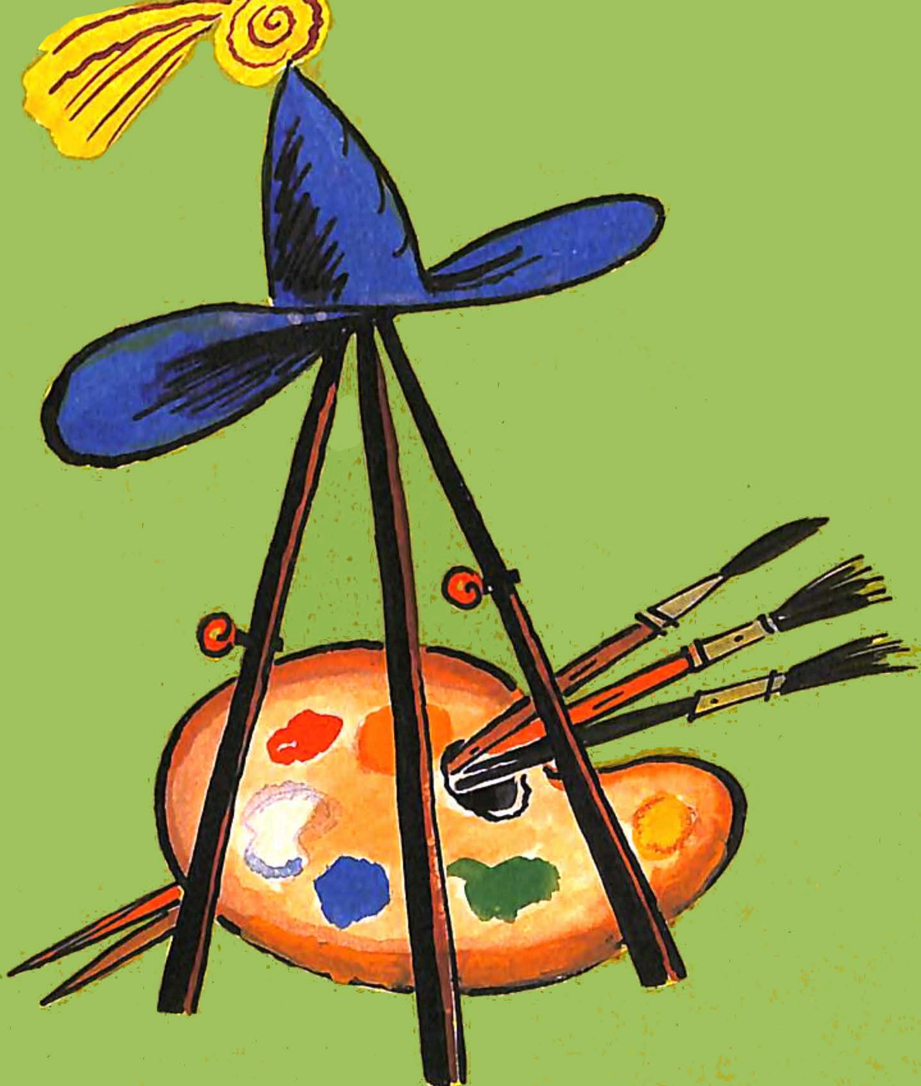
Н. Носов
КАК НЕЗНАЙКА БЫЛ ХУДОЖНИКОМ
на языке хинди

N. Nosov
HOW DUNNO BECAME AN ARTIST
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित







ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002332-7